हिंदी दिवस विशेष: बच्चों की लाइब्रेरी बना रहे हैं? इन 7 बेहतरीन हिंदी किताबों से शुरुआत करें

काव्य डेस्क

हर भाषा अपने भीतर एक पूरा संसार समेटे होती है—लोरियाँ जो रात को सुनाई जाती हैं, चुटकुले जो नाश्ते के साथ साझा होते हैं, कहानियाँ जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती हैं। 52.8 करोड़ से अधिक लोगों के लिए हिंदी वही संसार है। यह भारत की सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। फिर भी, बच्चे जो भाषा घर पर बोलते हैं वो शायद ही उनकी किताबों तक पहुँच पाती है।

हर साल 14 सितंबर को मनाया जाने वाला हिंदी दिवस हमें याद दिलाता है कि भाषा कितनी गहराई से हमें जड़ों से जोड़ती है और बच्चों की कहानियों में यह कितनी ख़ूबसूरती से खिल सकती है। किसी भाषा के

प्रति प्रेम जगाने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि बच्चे उसे सिर्फ़ पढ़ाई के विषय के तौर पर न देखें, बल्कि खेल, कविता और दोस्ती की तरह महसूस करें।

ऐसी किताबें सिर्फ़ मनोरंजन नहीं करतीं। वे बच्चों को बड़े सवालों और भावनाओं से जुड़ने का रास्ता देती हैं —खोना, पहचान, अपनापन, न्याय—सब कुछ हँसी और जिज्ञासा के साथ। ऐसी किताबों से भरी लाइब्रेरी बच्चों को खुद को और अपने आस-पास की दुनिया को समझने का उपकरण देती है।

अगर आप सोच रहे हैं कि बच्चों की बुकशेल्फ़ पर कौन-सी हिंदी किताबें ज़रूर होनी चाहिए, तो टाटा ट्रस्ट्स की पराग ऑनर लिस्ट से चुनी गई ये 7 किताबें बेहतरीन शुरुआत हैं:

1. **दुनिया मेरी**

लेखक: गुलज़ार | चित्रांकन: एलन शॉ | प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
गुलज़ार के शब्द जब एलन शॉ और उनकी पाँच साल की बेटी फ़्रीडा की कला से मिलते हैं तो नतीजा होता है —कविता, चित्र और पिता-बेटी की शरारतों का अनोखा संगम। कभी कविता, कभी तस्वीर—किताब बच्चों को उलझाती भी है और चौंकाती भी। इसे बिस्तर पर, फर्श पर या कहीं भी पढ़ा जा सकता है, क्योंकि बच्चों को सिर्फ़ उपदेश नहीं चाहिए।

2. **जंगल किसका**

लेखिका: समीता उइके | चित्रांकन: पूजा साहू | प्रकाशक: मुस्कान
ईंट भट्टी से काम ख़त्म कर मज़दूर जंगल में आराम करने आते हैं। लेकिन सवाल उठता है—जंगल किसका है? बेहद सधी हुई भाषा और गहरे चित्रों के साथ यह छोटी-सी कहानी बड़े सवाल उठाती है- ज़मीन, अपनापन और सह-अस्तित्व के सवाल। किताब हमें याद दिलाती है कि जंगल सिर्फ़ इंसानों का नहीं, और भी कई जीवों का घर है। इसमें आदिवासी जीवन और स्त्री-पुरुष संबंधों की झलक भी है।

3. **गथली तो परी है**

लेखिका व चित्रांकन: कनक शशि | प्रकाशक: एकलव्य
“आप मुझे लड़का क्यों कहते हैं, जब मैं लड़की हूँ?” गुथली का यह सीधा-सा सवाल बहुत गहरे मायने लिए है। यह किताब लैंगिक पहचान पर एक प्यारी और साहसी कहानी है। गुथली को अपनी फ़्रॉक, अपने दोस्त और अपनी छोटी-सी दुनिया पसंद है, लेकिन जब उससे कहा जाता है कि वह फ़्रॉक नहीं पहन सकती, तो सवाल उठते हैं—गुथली कौन है? रंगीन कटआउट चित्र, गुथली की चमक, दुख और परिवार की उलझनें बेहद जीवंत रूप से दिखाते हैं।

4. **क्या तुम हो मेरी दादी?**

लेखिका व चित्रांकन: सानिका देशपांडे | प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
अवनी की दादी का देहांत हो जाता है। परिवार कहता है—तेरह दिन बाद दादी लौटेंगी, पर किसी और रूप में—शायद पक्षी, फूल या चींटी। इसके बाद अवनी चारों तरफ़ देखने लगती है, हर छोटी मौजूदगी में दादी को ढूँढ़ने लगती है। कहानी दुख और जिज्ञासा को बड़े कोमल ढंग से पिरोती है। चित्र परिवार की भावनाओं को उतार-चढ़ाव के साथ दर्शाते हैं। यह किताब बच्चों के लिए याद, बदलाव और खोने को समझने का संवेदनशील माध्यम है।

5. **छुटकी और चीरो**

लेखिका: मंजीरी सिंह | चित्रांकन: प्रशांत सोनी | प्रकाशक: एकलव्य
छुटकी हमेशा अँधेरे से डरती रही है। एक रात, माँ कहती है कि अँधेरे में एक परी आती है। छुटकी टॉर्च लेकर निकल पड़ती है और रास्ते में मिलती है—चीरो, एक चमगादड़ जो रोशनी से डरता है! दोनों एक-दूसरे को अपने डर का सामना करने में मदद करते हैं। कहानी बच्चों को साहस और सहानुभूति का संदेश देती है और सोचने पर मजबूर करती है—क्या छुटकी अपना अँधेरे का डर जीत पाएगी?

6. **क़ुतुबमीनार का पेड़**

लेखक: प्रभात | चित्रांकन: कविता सिंह केल | प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन

कवि और कथाकार प्रभात की यह किताब छह कल्पनाशील कहानियों का संग्रह है। पिंकी का इंजेक्शन और डॉक्टर से डरना, बाघ का कुएँ में गिर जाना, रात में मेमने के सवाल—सब हास्य और लोकजीवन की झलक के साथ लिखी गई कहानियाँ हैं। भाषा सरल, चुटीली और याद रखने लायक है। शानदार चित्र इन कहानियों को और जीवंत बना देते हैं।

7. **नानी चली टहलने**

लेखिका व चित्रांकन: दीपा बालसावर | प्रकाशक: प्रथम बुक्स

नानी और उनके पोते वेंकी के साथ एक मज़ेदार सैर। ख़ज़ाना की गली से लेकर यादों की गली तक—हर रास्ता, हर मोड़ एक नई कहानी कहता है। नानी हर जगह को नया नाम देती हैं और साधारण गलियों को छोटे-छोटे रोमांच में बदल देती हैं। वेंकी सब कुछ हैरानी से देखता है और अगली सैर का इंतज़ार करने लगता है। यह किताब दिखाती है कि पार्क तक की छोटी-सी सैर भी कितनी बड़ी खोज बन सकती है।

इन किताबों के ज़रिए बच्चे न सिर्फ़ हिंदी से गहरा रिश्ता बनाएँगे, बल्कि जीवन, समाज और कल्पना से भी नए ढंग से जुड़ेंगे।